Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 68, December 2020

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
(विशेषज्ञ समीक्षित)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
वर्ष 6, अंक 68, दिसंबर 2020

"प्रेमचंद की बाल कहानियों में नैतिकता "

वंदना
हिन्दी–विभाग (शोधार्थी)
गुरु नानक देव युनिवर्सिटी (पंजाब)
मोबा. 9569088578
E-mail: shrivandankumari@gmail.com

सारांश

नैतिकता का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। इस के बिना मनष्य पशु के समान है। नैतिकता ही मनुष्य को देवता बनाती है। प्रेमचंद की अनेक कहानियों में नैतिकता के दर्शन होते है। जिसमें त्याग भावना, पश्चाताप, मानवता, सरलता, निश्चल प्रेम तथा अंधविश्वास से मुक्ति आदि शामिल है। 'ईदगाह' कहानी में हामिद का त्याग भाव देखने को मिलता हैं। जिसमें वह अपने लिए मिठाई न खरीद कर अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदता है क्योंकि रोज रोटी बनाते समय उसकी दादी के हाथ जल जाते थे। 'गिल्ली डंडा' कहानी दो दोस्तों की कहानी है। जिसमें गसा का मित्र शहर जाकर भी नही बदलता। वह सरकारी अधिकारी बनने के बावजूद भेदभाव से मुक्त है। वह अपने मित्र गया से पहले की तरह ही मिलता है।

बीज शब्द: *मानवता, सरलता, निश्चल प्रेम, भेदभाव से रहित, अंधविश्वास से रहित, त्याग, पश्चाताप।*

भूमिका

हिन्दी साहित्य में ऐसी बहुत सी कहानियां है। जो कि नैतिकता से भरपूर है। ऐसे बहुत से साहित्यकार हुए है जिन्होंने बाल साहित्य की रचना की। हिन्दी का शायद ही कोई ऐसा साहित्यकार हो जिसने बाल साहित्य की रचना न की हो । जिनमें मुख्य रुप से प्रेमचंद, रामवृक्ष बेनीपुरी, जैनेद्र आदि का नाम लिया जा सकता है। मुंशी प्रेमचंद जी ने अनेक बाल कहानियां लिखी। जिनका उद्देश्य बच्चे के भीतर नैतिकता के संस्कार विकसित करना था। उनका कहानी लिखने का उद्देश्य मात्र मनोरंजन करना नही था। आप ने तीन सौ से अधिक कहानियां लिखी है। आप ने हर वर्ग को ध्यान में रख कर कहानियों की रचना की है। आप की कहानियों में सभी तरह के विषय मिलते है। शायद ही कोई ऐसा विषय हो जो आप से छूटा हो । आप को बच्चों से विशेष लगाव था। यही कारण रहा होगा जो आप ने बहुत सी बाल कहानियां रची।

कजाकी मुंशी प्रेमचंद की अत्यंत प्रसिद्ध कहानी है। कजाकी इस कहानी का नायक है। वह डाक लाने और ले जाने का कार्य करता है। किंतु एक बार वह देर कर देता है। बडे साहब उसे नौकरी से निकाल देते है। वह चुपचाप वहां से चला जाता है। कजाकी का बड़े साहब के लड़के से बहुत प्रेम होता है। वह उसे रोज नई – नई कहानियां सुनाता था। नौकरी छूट जाने के कारण कजाकी के घर का चूल्हा ठण्डा पड़ जाता है। बड़े साहब ने उसकी एक गलती पर उसे नौकरी से निकाल दिया। एक बार ऐसा हुआ वह छोटे बच्चे को खुश करने के लिए सारा दिन मेहनत करके उसके लिए हिरन का बच्चा पकड कर लाया। उस दिन वह अपनी ड्यूटी सही ढंग से न निभा पाया। इसी कारण बड़े साहब को गुस्सा आ गया। उन्होंने उसे नौकरी से निकाल दिया। किंतु उस के परिणाम पर विचार नही किया। वह बीमार रहने लगता है। एक बार वह बच्चे से मिलने जाता है, क्योंकि वह उससे बहुत प्रेम करता

था। वह बच्चा उस के लिए आटा लेकर आता है क्योंकि उसे पता था कि कजाकी ने भोजन नही किया है। उसके पास घर का खर्च चलाने के लिए अन्य कोई साधन नही था।

''बोला – यह आटा कैसा है, भैया ? मैने सकुचाते हुए कहा – तुम्हारे लिए जो लाया हूं। तुम भूखे होगे, आज क्या खाया होगा ? कजाकी की आंखे तो मै न देख सका, उसके कंधो पर बैठा हुआ था। हां उसकी आवाज से मालूम हुआ कि उसा गला भर आया। बोला – भैया क्या रुखी ही रोटिया खाउगा ? दाल, नमक, घी और तो कुछ नही है। मै अपनी भूल पर बहुत लज्जित हुआ। सत तो है, बेचारा रुखी रोटियां कैसे खायेगा ? लेकिन नमक , दाल, घी कैसे लाउ ? अब तो अम्मा चौके में होगी। आटा ले कर तो किसी तरह भाग आया।"[1] ''फिर वह कई दिनों तक उससे मिलने नही आता । एक बार उस की घरवाली बडे साहब के घर आती है। वह छोटे बच्चे के लिए कमल ककडी लाती है। जिसे देखकर वह खुश हो जाता है। उस की घरवाली से पता चलता है कि कजाकी बहुत बीमार है। उसकी मालकिन समझ जाती है कि उस की बीमारी का क्या ईलाज है। बड़े मालिक उसे नौकरी पर आने को कहते है। यहां पर उस छोटे बच्चे में मनावता के गुण दिखाई पड़ते है। उसी के कारण उस के पिता बाद में कजाकी को नौकरी पर रख लेते है।"[2]

छोटे बच्चों में जो सरलता होती है वह और कही देखने को नही मिलती । प्रेमचंद की 'चोरी' कहानी में यही सरलता देखने को मिलती है। छोटे बच्चे से काम करवाना बड़ा आसान होता है। बस उन्हे थोडा प्यार से काम के बारे में समझओ, फिर उनसे जितना मर्जी काम बडी आसानी से करवाया जा सकता है। चोरी कहानी में कुछ ऐसा ही देखने को मिलता है। जिसका फायदा माली उठाता है। वह अपने हिस्से का सारा काम छोटे बच्चों से करवाता है और वह भी पूरा मन लगा कर काम करते है। छोटे बच्चे छल – कपट से रहित होते है। वह बहुत सीधे और सरल होते है।

'' बूढा माली हमे अपने झोपड़ी में बडे प्रेम से बैठाता था। हम उससे झगडा कर उस का काम करते । कही बाल्टी लिये पौधों को सींच रहे है कही खुरपी से क्यारियां गोड रहे है कही कैंची से बेलों की पत्तियां छाट रहे है। उन कामों में कितना आन्नद था। माली बाल प्रकृति का पंडित था। हमसे काम लेता, पर इस तरह से मानो हमारे ऊपर कोई एहसान कर रहा है। ''[3]

आज के समय में जहां बच्चे अपने मां – बाप को अनाथ आश्रम में छोड़ आते है। उनके मन में अपने माता –पिता के प्रति कोई आदर नही होता। प्रेमचंद ने अपनी कहानी 'हज–ए– अकबर' के माध्यम से एक बच्चे का अपनी दायी के प्रति प्रेम दिखाया गया है। वह उस छोटे से बच्चे से बहुत प्रेम करती थी । किंतु उस की अम्मी नही चाहती थी कि अन्नी उसके घर में रहे। अब वह कैसे भी करके उसे घर से निकाल देना चाहती है। छोटी – छोटी बातों पर उसे से नाराज हो जाती । वह कई बार अन्नी से घर पर काम न करने के लिए कहती है। एक बार वह गुस्से से बोल देती है, जिसका असर अन्नी के मन पर होता है। वह अब उसके घर काम न करने का निर्णय लेती है।

वह दायी के जाने के बाद खाना –पीना छोड देता है और बीमार पड जाता है। जब उस के पिता डॉक्टर को दिखाकर हार जाते है । वह बच्चा अन्नी के न होने से ही बीमार पड जाता है।उनकी बस्ती में बहुत से हज पर जा रहे होते है। वह भी हज के तैयार हो जाती है। वह सोचती है कि उसे ईश्वर का बुलावा आया है। इस कारण उसे हज पर जरुर जाना चाहिए। इसी बीच लडके के पिता बच्चे की बीमारी की खबर उन्हें देते है। ''उसकी तबीयत तो उसी दिन से खराब है जिस दिन तुम वहां से निकली। कोई दो हफता तक तो शब –ओ– रोज अन्ना अन्ना की रट लगाता रहा । और अब एक हफ्ता से खांसी और बुखार से मुदिन मुब्तिला है। सारी दवाएं कर के हार गया। कोई नफा ही नही हो

रहा। मैंने तो इरादा किया था। चल कर तुम्हारी मिन्नत समाजत करके ले चलू क्या जाने तुम्हे देखकर उसकी तबीअत कुछ संभल जाए ।''[4] वह अपने बच्चे की खातिर लौट आती है। वह बालक धीरे–धीरे ठीक हो जाता है।

प्रेमचंद की एक अन्य कहानी 'गिल्ली डंडा' दो मित्रों की कहानी है। दोनो बचपन के अच्छे मित्र होते है । गिल्ली डंडे की खेल की वजह से दोनो के बीच में लड़ाई होती है। एक मित्र शहर में चला जाता है जबकि दूसरा मित्र गांव में रहता है। शहर वाला मित्र जब गांव में आता है , तो उसे अपने बचपन के मित्र गया की याद आती है। वह उसे गिल्ली डंडा खेलने का आग्रह करता है। वह अब बहुत बडा अफसर बन गया था। जिस कारण सभी उस का सम्मान करते थे। बचपन की मित्रता में अब पहले जैसे बात नही थी। किंतु वह अब भी वही भाव पाले हुआ था। गया जो छोटी जाति का था। वह भी अपने मित्र को उसी नजर से देखता था, जैसे की अन्य लोग। वह भी अपने अफसर बने मित्र का सम्मान करता है। किंतु जब उस का मित्र उसके साथ गिल्ली डंडा खेलता है, तो वह उसके साथ पहले जैसा व्यवहार नही करता जैसा कि बचपन में किया करता था। उसे अब भी याद है जब उस ने बार उसका दाव देने से मना कर दिया, तो इसी गया ने उसे जोर से डंडा दे मारा था। एक वह समय था जब वह मेरे हार जाने पर अपना दाव लिए बिना नही मानता था और एक आज का दिन है जो दांव देने के लिए नही कह रहा है। उस के मन में अपने मित्र के प्रति वही सच्चा भाव होता है। जो बचपन में था । एक सच्चे मित्र की यही पहचान होती है। वह जाते हुए भी उसे भूल नही पाता। वह अपने मन में सोचता है कि गया कितना बड़ा हो गया है और मैं कितना छोटा। जितना सम्मान मुझे गया से मिला था, उस समय उतना तो मै अफसर बन कर भी नही पा सकता हूं। ''वाह ! वह मेरे बाल जीवन की सबसे रसीली याद है। तुम्हारे डंडे में जो रस था, वह तो अब न आदर – सम्मान में पाता हूं, न धन में। ————मै अब अफसर हूँ। यह अफसरी मेरे और उसके बीच दीवार न गई है, अदब पा सकता हूँ, साहचर्य नही पा सकता। लड़कपन था, तब मै उसका समकक्ष था। यह पद पाकर, अब मै केवल उसकी दया योग्य हूँ वह मुझे अपना जोड़ नही समझता। वह बड़ा हो गया है। मै छोटा हो गया हूं । ''[5]

बच्चे अंधविश्वास से रहित होते है। प्रेमचंद की तेतर कहानी में दादी लड़की को अंधविश्वास के चलते मार देना चाहती है। उनका मानना था कि लड़की तेतर है क्योंकि तीन लड़को के बाद पैदा हुई है। जिस कारण उनकी जान भी जा सकती है। यह लड़की अशुभ है। वह लड़की की मां को बुरा – भला कहती है। उन्हीं के कारण बच्चे की मां उसे दूध नही पिलाती ताकि लड़की जल्दी मर जाए । पुरानी मान्यता है कि तीन लड़कों के बाद पैदा हुई लड़की घर के किसी सदस्य की जान लेकर रहती है। इस में विशेष रुप से जान जाने का खतरा लड़की के मां – बाप तथा किसी बुर्जुग का होता है। लड़की की दादी नही चाहती की लड़की जीवित बचे। इस कहानी में बच्चे छोटी लड़की को बकरी का दूध पिलाते है। जिस कारण उस की जान बच जाती है। यह देख कर सभी को हैरानी होती है कि आखिर लड़की दिन प्रति दिन स्वास्थ्य कैसे होती जा रही है। इसी बात को लेकर सास अपनी बहू को बहुत बुरा – भला कहती है क्योंकि उसे विश्वास है कि उस की बहू ने जरुर उस बच्ची को दूध पिलाया है। जबकि इस के पीछे की कहानी ही कुछ और होती है। उस घर के बच्चे मौका देख कर अपनी बहन को बकरी का दूध पिला देते थे। वह बकरी उन के घर के सामने रोज चरने आती थी । उन्होंने बकरी को भूसी और चोकर खिला कर खूब परचा लिया था। वह बकरी भी बच्ची को दूध पिला कर प्रसन्न थी। वह उन लडकों को परेशान नही करती थी। उन बच्चों को ऐसा करने विशेष आन्नद आता था। ''बालको को बच्चों से बहुत प्रेम होता है। अगर किसी घोसले में चिडियां का बच्चा देख जाये तो बार–बार वहां जायेंगे। देखेंगे कि माता बच्चों को कैसे दाना चुगाती है। बच्चा कैसे चोच खोलता है, कैसे दाना लेते

समय पैरों को फडफडाकर चे–चे करता है। आपस में बड़े गम्भीर भाव से उसकी चर्चा करेंगे, अपने अन्य साथियों को ले जाकर उसे दिखाएगे, सिद्धू ताक में लगा रहता, ज्यों ही माता भोजन बनाने या स्नान करने जाती तुरन्त बच्ची को लेकर आता और बकरी को पकड कर उसके थन में शिशु का मुंह लगा देता, कभी दिन में दो–दो तीन–तीन बार पिलाता। बकरी को भूसी – चोकर खिलाकर ऐसा परच लिया कि स्वयं चोकर के लोभ में चली आती और दूध देकर चली जाती ।''[6]

प्रेमचंद की कहानी ईदगाह में त्याग की भावना देखने को मिलती है। इस कहानी का नायक हामिद है। इस कहानी में हामिद कोई भी चीज अपने लिए न लेकर अपनी दादी के लिए लेता है। वह अपनी दादी की तकलीफों को अच्छी तरह से जानता है। इसी कारण वह दादी के लिए चिमटा खरीदता है ताकि उस की दादी के हाथ तवे से रोटियां उतारते हुए न जले। चिमटा खरीदने के लिए वह अपनी भूख की परवाह नही करता । जबकि उसके दोस्त मिटाईयां खरीदते है और हामिद को चिढ़ाते हुए खाते है। वह उसे मिठाई देने का नाटक करते । उसके बाद वह खिलौने खरीदते । यहां पर भी वह हामिद को खूब खिजाते । वह केवल ललचाई नजरों से उन खिलौनों की तरफ देखता। किंतु कुछ भी नही कहता। उसे उम्मीद थी उसके अम्मी और अबू जब आएँगे तो उसके लिए बहुत से खिलौने लाएँगे। वह मेले में व्यर्थ की चीज न खरीद कर अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदता है। वह समझता है कि ज्यादा मिठाईयां सेहत के लिए अच्छी नही होती और खिलौने से क्या होता है वह व्यर्थ की पैसा बर्बाद करने की चीज है। उसका चिमटा उसकी मिठाईयों तथा खिलौने से कही ज्यादा अच्छा है। चिमटे से कई तरह के काम किए जा सकते है। इस तरह वह अपने पैसे व्यर्थ न गवा कर एक काम की चीज खरीदता है। उसे उम्मीद थी कि उसकी दादी खुश हो जाएगी और उसे दुआएं देगी। इसी कारण वह चिमटा खरीद लेता है।

'' वे आगे बढ जाते है। हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख्याल आया । दादी के पास चिमटा नही है। तवे से रोटियां उतारते है, तो हाथ जल जाता है। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे तो वह कितनी प्रसन्न होगी। फिर उनकी उगलियां कभी न जलेगी। घर में एक काम की चीज हो जाएगी। खिलौने से क्या फायदा ? व्यर्थ में पैसे खराब होंगे है। जरा देर ही तो खुशी होती है। फिर तो खिलौने की कोई आंख उठाकर नही देखता। यह तो घर पहुँचते –पहुँचते टूट – फूट के बराबर हो जाएगे । चिमटा कितने काम की चीज है। रोटियां तवे से उतार लो, चूल्हे में सेंक लो। कोई आग मांगने आये तो चटपट चूल्हे से आग निकालकर उसे दे दो। अम्मा बेचारी को कहां फुरसत है कि बाजार आए और इतने पैसे ही कहां मिलते है, रोज हाथ जला लेती है।''[7]

बहुत कम लोग होते है जो अपनी गलती स्वीकार करते है। किंतु बच्चे में यह भावना देखने को मिलती है। वह अपनी की हुई गलती को तुरन्त स्वीकार करते है। "रक्षा में हत्या" कहानी में यही भाव देखने को मिलता है। केशव और उसकी बहन श्यामा को पक्षियों से बहुत प्यार होता है। वह पंडुर पक्षी की हर तकलीफ को दूर कर देना चाहते थे। वह हर समय पक्षी का विशेष रुप से ध्यान रखते है। उसके पानी पीने का प्रबंध करते है। वह पक्षी के अंडों को सुरक्षित रखने के लिए उसके नीचे बिछौना बिछा देते है। उन पर धूप न पड़े इस बात का भी विशेष ध्यान रखते है। उन्हें हर समय पक्षियों और उनके अंडों की फिकर रहती । जब उनकी माता जी को सारी बात पता चलती है कि उनके बच्चे सारी दोपहर पक्षियों के पीछे लगे रहते है। तब उन्हे बच्चों की सारी शैतानी समझ आती है। जो अंडे जमीन पर गिरे है उनके जिम्मेदार यह बच्चे ही है। इस कारण वह उन को डांटती है। तब जाकर बच्चे सारी सच्चाई बता देते है। इस सारी घटना के लिए वह खुद को बेकसूर मानते हैं क्योंकि उन्हें नही पता था कि उनके ऐसा करने से पक्षी अंडे गिरा देंगे। उस बात का पछतावा वह मन ही मन में करते है।

''मगर केशव को कई दिनों तक अपनी भूल पर पश्चाताप होता रहा। अंडो की रक्षा करने के भ्रम में उसने उसका सर्वनाश कर डाला था। इसे याद करके वह कभी – कभी रो पडता था। दोनो चिडियां वहां फिर न कभी दिखाई दी ''[8]

निष्कर्षः इस प्रकार से हम कह सकते है कि आप की कहानियां जितनी अपने समय में प्रासंगिक थी, उतनी आज भी है।

संदर्भ सूची

1 hindikahani.hindikavita .com
2 वही
3 वही
4 वही
5 वही
6 वही
7 वही
8 वही